

अंधा घोड़ा

THE BLIND HORSE

by Konstantin USHINSKY

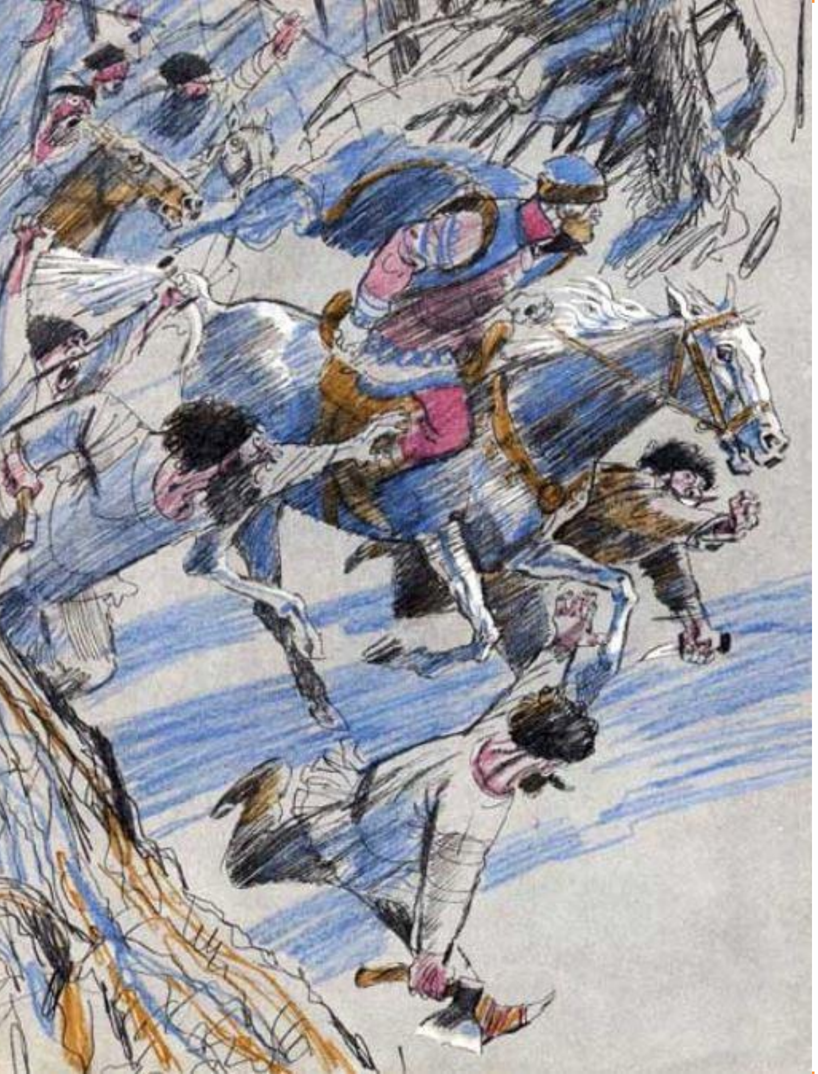
कॉन्स्टेंटिन उशिंस्की

चित्र: वी. गाल्डजेव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता



बहुत समय पहले, न केवल हमारे, बल्कि हमारे दादा और परदादाओं के जन्म से भी पहले, विनीता नाम का एक समृद्ध स्लाव व्यापारिक शहर समुद्र के किनारे पर स्थित था. और उस शहर में अल्थोम नाम का एक अमीर व्यापारी रहता था, जिसके कीमती सामानों से लदे जहाज, दूर-दूर तक समुद्रों में घूमते थे.

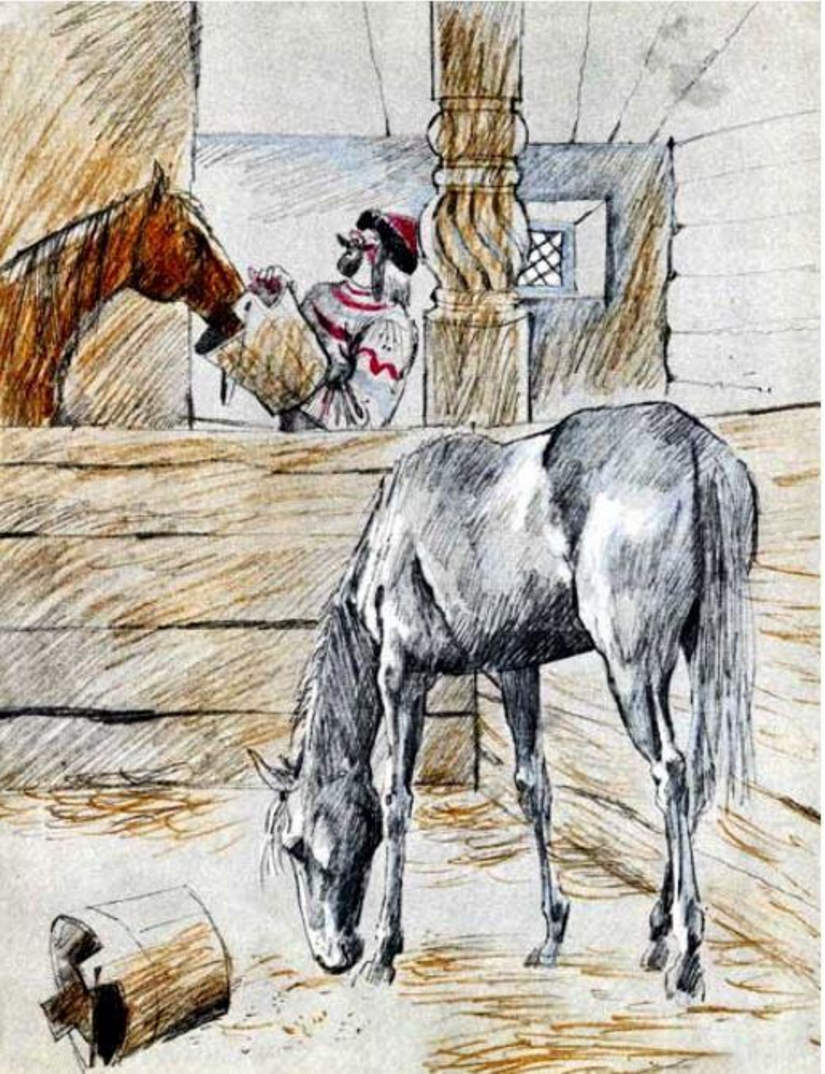


एल्थोम बहुत अमीर था और वो विलासिता में रहता था: शायद उसका नाम एल्थोम, यानि ऑल-एट-होम, इस तथ्य से उपजा था कि उसके घर में वो सब कुछ अच्छा और कीमती था जो उस समय खरीदा जा सकता था. इसलिए एल्थोम, उसकी पत्नी और बच्चे केवल सोने और चांदी के बर्तनों में ही खाना खाते थे और केवल सेबल और ब्रोकेड के बने महंगे कपड़े ही पहनते थे.

एल्थोम के अस्तबल में कई अच्छे घोड़े थे; लेकिन उसके अस्तबल में या पूरे विनीता शहर में "चेज़-द-विंड" से अधिक तेज़ या सुंदर और कोई घोड़ा नहीं था. मालिक के अलावा किसी की भी चेज़-द-विंड घोड़े पर चढ़ने की हिम्मत नहीं की, और एल्थोम खुद कभी भी किसी दूसरे घोड़े पर सवारी नहीं करता था.

एक बार अपनी यात्रा में व्यापारी एल्थोम विनीता वापिस लौट रहा था. वो अपने प्रिय घोड़े पर सवार होकर एक बड़े अंधेरे जंगल से गुजर रहा था. शाम करीब आ चुकी थी और जंगल बहुत अंधेरा और घना था, हवा ने उदास देवदारों के ऊपरी तनों को हिलाया. व्यापारी अकेला यात्रा कर रहा था और अपने प्रिय घोड़े पर धीरे-धीरे चल रहा था, क्योंकि घोड़ा लंबी यात्रा से थक गया था.

अचानक झाड़ियों में से, क्रूर चेहरे वाले, फटी हुई टोपी पहने, हाथों में भाले, कुल्हाड़ी और चाकू लिए छह मजबूत आदमी निकले; उनमें तीन घुड़सवार और तीन पैदल थे. उनमें से दो लुटेरे व्यापारी एल्थोम के घोड़े को लगाम से पकड़ने ही वाले थे.



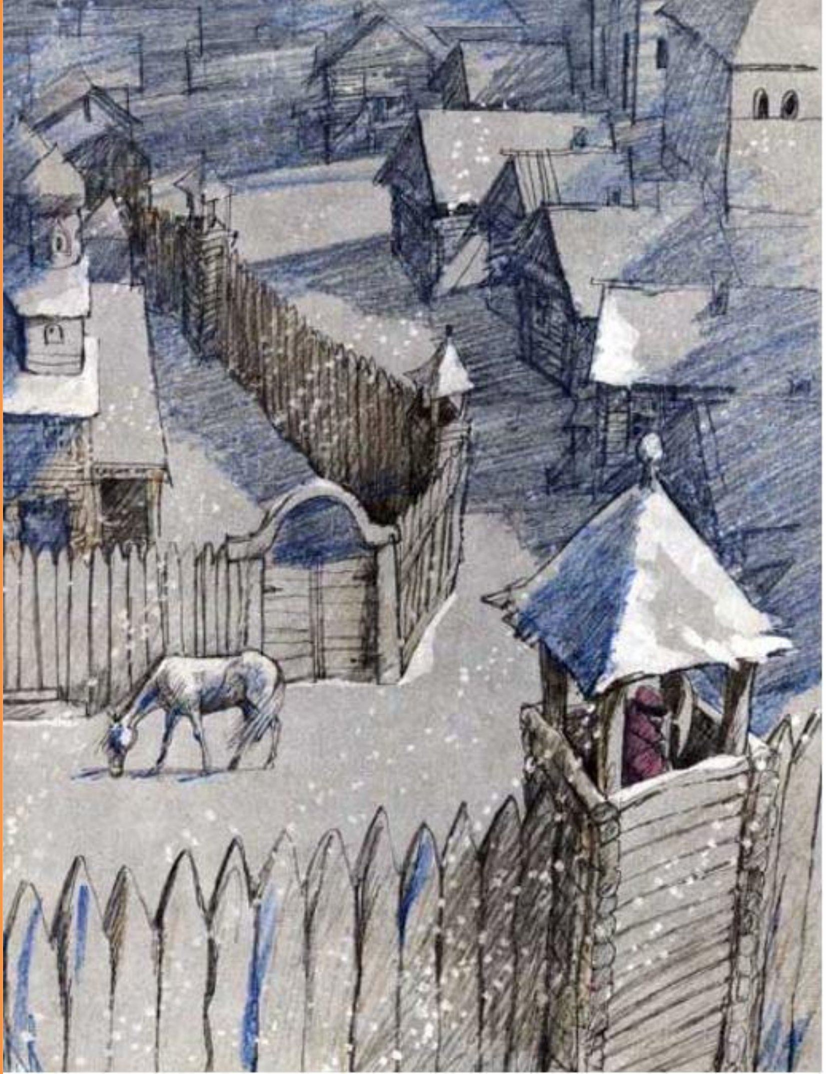
अगर एल्थोम चेज़-द-विंड के बजाए किसी अन्य घोड़े पर सवारी कर रहा होता तो वो अपने शहर विनीता को फिर कभी नहीं देख पाता. अपनी लगाम पर एक अजीब हाथ महसूस करते हुए, घोड़ा तेज़ी से आगे दौड़ा उसकी चौड़ी, शक्तिशाली छाती ने उन दो साहसी लुटेरों को जमीन पर पटक दिया, जिन्होंने उसकी लगाम पकड़ने की कोशिश की थी. उसने तीसरे को रौंद दिया, जो अपने भाले को लहराते हुए उसका रास्ता रोकने के लिए आगे दौड़ा था. फिर घोड़ा हवा की तरह तेजी से सरपट दौड़ा. घुड़सवार लुटेरे पीछा करने निकले; उनके घोड़े भी अच्छे थे, लेकिन वे एल्थोम के घोड़े को पकड़ने में असफल रहे!

थकान के बावजूद, चेज़-द-विंड घोड़े को अपना पीछा करने का एहसास हुआ और वो एक धनुष से तीर की तरह दौड़ा, और उसने लुटेरों को बहुत पीछे छोड़ दिया.

आधे घंटे बाद एल्थोम अपने अच्छे घोड़े पर सवार होकर अपने मूल स्थान विनीता पहुंच गया. अब उसके घोड़े के मुंह से झाग बह रहा था.

घोड़े से उतरकर, जिसका पीछे वाला भाग थकावट के कारण ऊंचा हो गया था, व्यापारी ने चेस-द-विंड की पसीने से तर गर्दन पर अपना हाथ फेरा और फिर कसम खाई कि चाहे कुछ भी हो जाए वो अपने वफादार घोड़े को कभी नहीं बेचेगा या देगा नहीं, चाहे वो कितना भी बूढ़ा हो, उसे कभी नहीं भगाएगा, और जब तक वो मरेगा नहीं वो, उसे प्रतिदिन तीन माप सर्वोत्तम जई खिलाएगा.

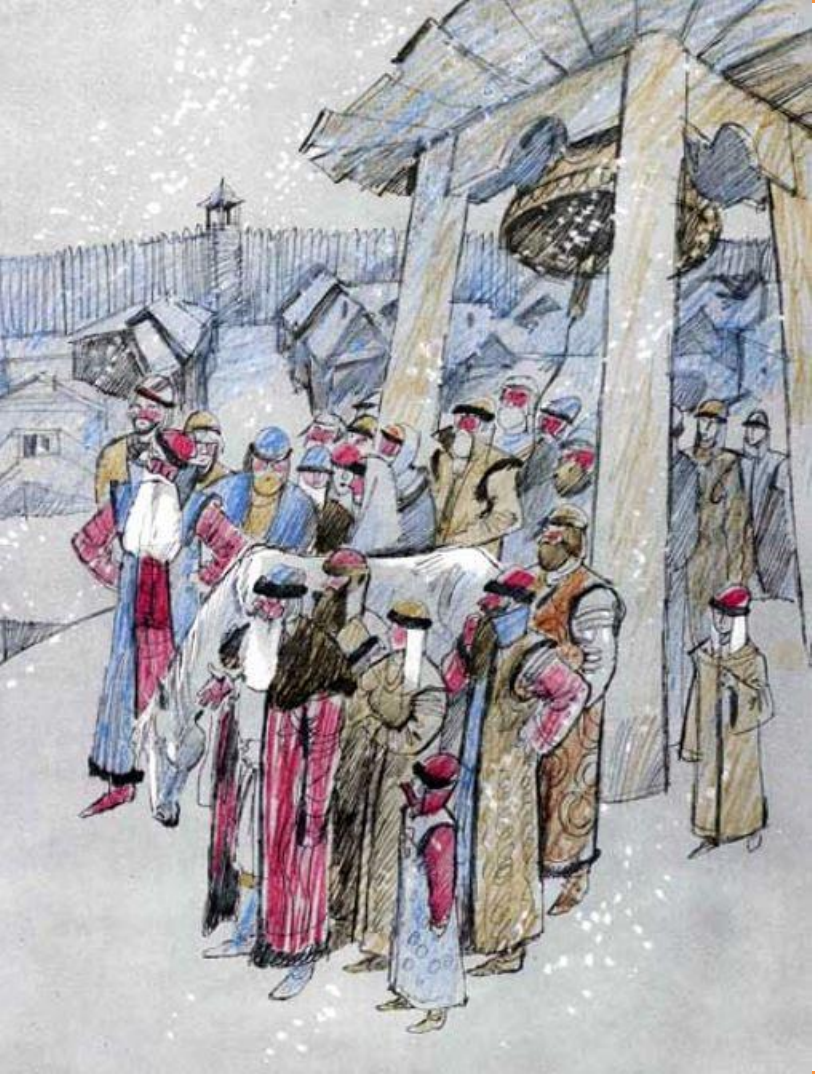
लेकिन एल्थोम को अपनी पत्नी और बच्चों का स्वागत करने की जल्दी थी और इसलिए वो खुद घोड़े को नहीं देख पाया. उसके आलसी सईस ने थके हुए घोड़े की अच्छी देखभाल नहीं की, उसे ठंडा नहीं होने दिया और उसे बहुत जल्दी पानी पिला दिया.



उस दिन से चेज़-द-विंड बहुत बीमार हो गया, उसके पैर कमजोर हो गए और अंततः वो अंधा हो गया. व्यापारी को बहुत दुख हुआ और उसने छह महीने तक अपना वादा निभाया: अंधा घोड़ा अस्तबल में ही रहा और हर दिन उसे तीन माप जई खिलाई गई.

फिर अल्थोम ने अपने लिए एक और नया घोड़ा खरीदा, और छह महीने बाद उसने फैसला किया कि एक अंधे, बेकार घोड़े को तीन माप जई रोज़ाना खिलाना बेकार था, इसलिए अल्थोम ने आदेश दिया कि घोड़े को सिर्फ दो माप दिए जाएं. छह महीने और बीत गए; अंधा घोड़ा अभी जवान था और उसे लंबे समय तक खाना खिलाना पड़ता, इसलिए अल्थोम ने घोड़े को प्रतिदिन एक माप देना शुरू कर दिया. अंत में, व्यापारी ने निर्णय लिया कि वो भी बहुत अधिक था, और उसने चेज़-द-विंड को बेलगाम करने उसे गेट से बाहर खदेड़ने का आदेश दिया ताकि वो में जगह न घेरे. सईस ने अंधे घोड़े को छड़ी से अस्तबल के बाहर खदेड़ दिया, क्योंकि घोड़े ने अपनी एड़ियां गड़ा दी थीं और हिलने से मना कर दिया था.

बेचारा, अंधा चेज़-द-विंड समझ नहीं पा रहा था कि उसके साथ क्या हो रहा था, और क्योंकि वो कुछ देख नहीं सकता था इसलिए वो गेट पर ही रुका रहा, उसका सिर लटका हुआ था और उसके कान उदासी से घूम रहे थे. फिर रात आई और बर्फबारी शुरू हो गई. बेचारे अंधे घोड़े के लिए पत्थरों की ज़मीन पर सोना कठिन और बहुत ठंडा था. इसलिए वो कई घंटों तक एक ही स्थान पर खड़ा रहा, लेकिन अंततः भूख के मारे उसे भोजन की तलाश में निकलना ही पड़ा. अपना सिर उठाए किसी पुरानी, ढीली छत से पुआल का एक गुच्छा खाने के लिए, अंधा घोड़ा बेतरतीब ढंग से इधर-उधर घूमता रहा, और घरों और बाड़ों के कोनों से टकराता रहा.



यहां मुझे समझाना चाहिए कि सभी पुराने स्लाव शहरों की तरह, विनीता में भी कोई राजा नहीं था, और शहरवासी अपने शहर पर खुद शासन करते थे. जब कभी महत्वपूर्ण मामलों पर निर्णय लेने की आवश्यकता होती थी, तो सभी लोग शहर के चौक पर इकट्ठा होते थे.

वे अपनी समस्यों पर स्वयं निर्णय लेते थे. न्याय और दंड देने वाले लोगों की इस सभा को "वेचे" कहा जाता था. विनीता के मध्य में, उस चौराहे पर जहां "वेचे" मिलते थे, वहां पर चार खंभों पर एक बड़ी "वेचे" घंटी लटकी हुई थी. वो घंटी लोगों को एक-साथ बुलाती थी. अगर किसी के साथ अन्याय हुआ हो या फिर जो भी न्याय और सुरक्षा चाहता हो, वो उस घंटी को बजा सकता था. बेशक, लोग छोटी सी बात के लिए "वेचे" घंटी बजाने की हिम्मत नहीं करते थे, क्योंकि वे जानते थे कि फिर लोग उन्हें उसके लिए सजा देंगे.

चौक पर घूमते हुए, अंधा, बहरा और भूखा घोड़ा उन खंभों से टकरा गया जिन पर घंटी लटकी हुई थी. शायद उसे खम्बों की छत पर से पुआल का एक गुच्छा पाने की उम्मीद थी, इसलिए उसने घंटी से बंधी रस्सी अपने दांतों से पकड़ ली, और उसे खींचने लगा. घंटी इतनी जोर से बजी कि, हालांकि अभी बहुत जल्दी थी, लोग यह जानने के लिए उत्सुकता से चौक की ओर दौड़ पड़े कि कौन इतनी जोर से उनसे न्याय और सुरक्षा की मांग कर रहा था. विनीता में हर कोई चेज़-द-विंड घोड़े को जानता था. लोग यह भी जानते थे कि उसने अपने मालिक की जान बचाई थी. लोग घोड़े के मालिक के वादे के बारे में भी जानते थे - इसलिए वे अंधे, भूखे, ठंड से कांपते और बर्फ से ढके बेचारे घोड़े को चौक के बीच देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुए.



जल्द ही लोगों को पूरा मामला क्या था, यह समझ में आया. जब लोगों को पता चला कि अमीर अल्थॉम ने अपने उस घोड़े को भगा दिया था जिसने उसकी जान बचाई थी, तो उन्होंने सर्वसम्मति से फैसला किया कि चेस-द-विंड ने वेचे घंटी को बजाने का बिल्कुल सही निर्णय लिया था.

लोगों ने कृतघ्न व्यापारी को तुरंत चौराहे पर बुलाया. अल्थॉम द्वारा खुद को सही ठहराने की तमाम कोशिशों के बावजूद, उसे घोड़े को पहले की तरह रखने और मरने तक उसे खिलाने का आदेश दिया गया. अल्थॉम अपनी पर सजा पर सही तरह से अमल करे उसके लिए एक विशेष व्यक्ति को नियुक्त किया गया. और उस सज़ा की स्मृति को एक पत्थर पर उकेरा गया और उसे वेचे चौक पर स्थाई रूप से स्थापित किया गया.